I wish to assure the Hon'ble Members of the House that we will spare no effort in supporting the S ate Governments $t_0$ meet the situation effectively

## SHORT DURATION DISCUSSION

### Serious situation in Assam in view of recent e*hnic clashes and messa- cre of refugees in Barpeta district— Contd.

श्री के० एम० खान (आन्ध्र प्रदेश) : डिप्टी चेयरमैन साहब ।

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल) : जरा समय का ध्यान रखिए, इतना निवेदन है । मैं किसी को कर्टेल नहीं करना चाहता । वैसे मिश्र जी का तीन मिनट का समय था, मैंने 17 मिनट दिया । किसी को डिबेट में कर्टेल करना अच्छा नहीं समझता हूं । आप समय का ध्यान रखिए, केवल इतना निवेदन किया है मैंने । यह मेडन स्पीच है आपकी ।

श्री के. एम. खान : यह कोई उन दो देशों के और दो धर्मों के बीच में आतंकवाद का मसला नहीं है । मैं इस सदन में यह दरख्वास्त करूंगा कि इस सारे मामले पर एक इंसानी मसले की हैसियत से गौर किया जाए । बरपेटा में निहत्थे इंसानों पर, औरतों और बच्चों पर जिस बहिमाना तरीके से हमला हुआ, उनका कत्लेआम हुआ यह हमारी सेक्युलर डैमोक्रेसी पर एक काला धब्बा है । . . . (व्यवधान)

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश) : जोगी जी का भी नाम लिख लेना । . . . . (व्यवधान)

श्री के० एम० खान : वजूहात जो कुछ भी रही हों, लेकिन किसी ऐसे इंसान पर जिसका कोई जुल्म न हो, जिसका कोई कसूर न हो उन पर इस तरह अगर गोलियां चलाई जाएं, इस तरह अगर उनको हलाक किया जाए तो यह एक ऐसा वाकया है जिसकी जितनी भी मजम्मत की जाए, कम है । चेयरमैन साहब, मैं यह कहना चाहता हूं कि अखबारी इत्तला के मुताबिक 19 और 20 जुलाई के दरम्यान इस इलाके में बोडो सिक्योरिटी फोर्स के लोगों ने हमला करके वहां 250 गांव जलाकर राख कर दिए और 16 व्यक्तियों को इस हमले में हलाक किया । इनका कसूर क्या था ? इनकी गलती क्या थी ? अगर इनकी गलती यह थी कि यह नान-बोडो थे, या इनका किसी खास तबके से या फिरके से ताल्लुक था, तो मैं समझता हूं इससे शर्मनाक बात और कोई नहीं हो सकती । इनका किसी खास तबके से ताल्लुक था और मैं समझता हूं कि इससे ज्यादा शर्मनाक बात नहीं हो सकती । तो इन वाकयात के सिलसिले में यह बात भी सामने आई है कि जब ये वाकयात हुए और इनको रिलीफ कैम्प में भेजा गया तो फिर इस रिलीफ कैम्प को, बरपेटा में जो रिलीफ कैम्प है, यह एक अलग इलाके में है और जो भूटान के बार्डर के करीब है और जो चारों तरफ जंगल से घिरा हुआ है । ऐसे इलाके में रिलीफ कैम्प को रखने से यह बात भी सामने आई कि इस रिलीफ कैम्प की सिक्योरिटी के लिए जितनी फोर्स की जरूरत थी, उतनी फोर्स वहां नहीं थी जिसके कारण एक ऐसे वक्त में जब कि सारे इलाके में कर्फ्यू लगा हुआ था, इन दहशतगर्दों ने इनके कैम्प पर हमला किया और सोते हुए इंसानों का कत्लेआम किया । मुझे यकीन है कि हमारा यह हाउस ऐसे वाकयात की भरपूर मजम्मत करेगा । इसमें किसी पोलिटिकल रिजर्वेशन से काम नहीं लिया जाएगा । क्योंकि यह एक ऐसा वाकया है जिसको हम एक कौमी सानया कह सकते हैं । इसके बाद मैं आपसे यह ख्वाहिश करूंगा कि हम अपनी लड़ाई उस रहनियत के खिलाफ, उस आइडियालाजी के खिलाफ शुरू करें जो नफरत की आइडियालाजी है, जो इंसानों को एक-दूसरे से तकसीम करने की आईडियालाजी है । जरूरत इस बात की है कि हम इस आइडियालाजी के खिलाफ लड़ें । अगर लड़ाई बोडोज और नान-बोडोज में है तो इसका हल तलाश किया जा सकता है । जैसा कि मुझसे पहले कहा गया ऐसा कोई मसला नहीं है जिसका हल नहीं है लेकिन बुनियादी बात यह है कि नफरत का जो प्रचार किया जा रहा है, नफरत की जो आग इस मुल्क में लगाई जा रही है धर्म के नाम पर, मजहब के नाम पर, भाषा के नाम पर, इलाके के नाम पर यह जो नफरत का

खल खेला जा रहा है, इसको बंद करने की जरूरत है यह मैं आपसे कहना चाहता हूं। तो इसके साथ-साथ मैं और चन्द बातें हैं, मैं उन बातों का जिक्र नहीं करूंगा यहां जिनका मुझसे पहले मेरे पूर्व वक्ता ने जिक्र किया लेकिन चन्द बातों का मैं जरूर जिक्र करना चाहता हूं। अभी कहा गया है और मुझसे पहले आई. एस. आई. का जिक्र किया गया। मैं साफ तौर पर यह कहना चाहता हूं कि सारा मुल्क आई. एस. आई. की सरगर्मियों से परेशान है और इसमें कोई दो रायें नहीं हैं। आई. एस. आई. के जो लोग हमारे मुल्क के अंदर आ कर हमारे मुल्क को तकसीम करने की, हमारे मुल्क को टुकड़े-टुकड़े करने की साजिशें कर रहे हैं, उनके खिलाफ सरकार को सख्त से सख्त कार्यवाही करनी चाहिए। मैं हैदराबाद शहर से आता हूं। मेरा ताल्लुक हैदराबाद शहर से है। हम देखते हैं कि हमारे शहर में कुछ लोग ऐसी बातें करते हैं कि आई. एस. आई. का ताल्लुक किसी एक खास फिरके से जोड़ दिया जाता है, किसी खास मज़हब से जोड़ दिया जाता है और कहा जाता है कि हैदराबाद की मस्जिदों के अंदर आई. एस. आई. की सरगर्मियां जारी हैं। कह दिया जाता है कि जो अकलियतों के मदरसे हैं उनके अंदर आई. एस. आई. की ट्रेनिंग हो रही है यह गलत है। जो लोग इस तरह की बात करते हैं, तो यह मसला सिर्फ बोडो और असम का नहीं है, यह मसला सारे देश का है, सारे मुल्क का है। जो लोग इस तरह की बातें करते हैं, उनका मकसद यह है कि इस मुल्क में नफ़रत की आग फैला कर अपना मकसद पूरा किया जाए। इसलिए मैं आपसे दरख्वास्त करता हूं और आपकी तवस्सुत से यह कहना चाहता हूं कि हम सब इस वाक्ये की भरपूर मजम्मत करें और इसके साथ-साथ बरपेटा में जो लोग अनाथ हुए हैं, उनके जो वारिस हैं, उनको मुआवजा दिया जाए। मैं यह कहना चाहता हूं कि हर मक्तूल को दो लाख रुपए अभी मिलें। अभी जैसा कि ओबेदुल्ला खान जी ने कहा कि हर मक्तूल को दो लाख रुपए का मुआवजा दिया जाए और इसके साथ-साथ जो बरपेटा का कैम्प है जिसके ताल्लुक ये रिपोर्ट पढ़ी गई है कि यह गैर-महफूज इलाके में है, इसको फौरन वहां से मुन्ताकिल किया जाए क्योंकि अगर यह कैम्प वहां रहता है तो वहां बहुत परेशानियों में जो लोग रहते हैं उनकी परेशानियों में और इजाफा होगा। उसके साथ-साथ वह सारे लोग जो इन 20 कैम्पों में पनाह लिए हुए हैं, उनकी जरूरियात का इंतजाम किया जाए क्योंकि यह सब गरीब तबके के लोग हैं। इनमें से बहुतों का ताल्लुक अकफेलयती की फ़िरकत से है और ये लोग ऐसे नहीं हैं कि दोबारा सिर उठा सकें, दोबारा अपना जला हुआ घर बना सकें इसलिए इनको बाद-आबाद करने की जरूरत है। इसके साथ साथ में आपसे यह भी दरख्वास्त करना चाहता हूं कि हमें ऐसा यत्न करना चाहिए, ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि सब की तलाश की जा सके और सच्चाई की तलाश इस तरह से करें कि एक आल पार्टी डेलिगेशन वहां पर जाकर देखे कि सच्चाई क्या है, और किस तरह से हिन्दुस्तान का यह सबसे बड़ा इदारा इस मसले का हल किस प्रकार करा सकता है, यह देखे तो मैं समझता हूं कि कोई गलत बात नहीं होगी।

मैं इन अल्फाज के साथ एक बात और कहना चाहता हूं कि सरकार ने जो मिलिटेंट्स के खिलाफ कारवाई शुरू की है, बोडो सैक्युरिटी फोर्स के जो ऐलिमेंट्स हैं जो इस घटना के लिए जिम्मेदार हैं, उनके खिलाफ कारवाई शुरू की जाए लेकिन एक बात मैं साफ कह देना चाहता हूं कि उन सबके खिलाफ कारवाई करने के जोश में कहीं ऐसा न हो कि हम उन उग्रवादियों को पकड़ने के जोश में ऐसे लोगों के खिलाफ कारवाई न कर बैठें जो कि बेकसूर हों। हम नहीं चाहते कि हमारे मुल्क में एक और नया पंजाब पैदा हो, हम नहीं चाहते कि हमारे यहां एक और काश्मीर बने या ऐसे इलाके पैदा हों कि जहां लोग एक दूसरे के खिलाफ हथियार उठाएं और एक दूसरे का खून बहाएं। इसलिए इस बात की कोशिश होनी चाहिए कि जो बोडोज में नाराजगी पैदा हुई है उसको खत्म करना चाहिए। मुझे यकीन है कि हमारे काबिल होम

मिनिस्टर राजेश पायलट साहब जिन्होंने वहां का दौरा करके एक ऐसा ऐटमास-फियर क्रियेट किया जिससे महसूस होता है कि जो लोग वहां कैंपों में रह रहे हैं उनकी हिफाजत के मसले पर सरकार की नजर है, उनको अपने घरों में लाने के लिए जो कोशिश की जा रही है, इसकी मैं तारीफ करता हूं और उम्मीद करता हूं कि जो लोग कैंपों में हैं उनको सरकार पूरी सुरक्षा देगी ।

शुक्रिया ।

شری کے۔ ایم۔ خان "آندھرا پردیش": ڈپٹی چیئرمین صاحب۔

اُپ سبھا ادھیکش "شری ستیش اگروال": ذرا سمے کا دھیان رکھیے اتنا ٹولرن ہے۔ میں کسی کو کرٹیل نہیں کرنا چاہتا۔ ویسے شری کا تین منٹ کا سمے تھا میں نے ۱۷ منٹ دیا۔ میں کسی کو ڈسپیٹ میں کرٹیل کرنا اچھا نہیں سمجھتا ہوں۔ آپ سمے کا دھیان رکھیے۔ کیوں اتنا ٹولرن کیا ہے میں نے۔ یہ میڈن اسپیچ ہے آپ کی۔

شری کے۔ ایم خان: یہ کوئی ان دو دیشوں کے اور دو دھرموں کے بیچ میں آتنکواد کا مسئلہ نہیں ہے۔ میں اس سدن سے یہ درخواست کروں گا کہ اس سارے معاملے پر ایک انسانی مسئلہ کی حیثیت سے غور کیا جائے۔ "بارپیٹا" میں نہتے انسانوں پر عورتوں اور بچوں پر جس بہیمانہ طریقہ سے حملہ ہوا ان کا قتل عام ہوا۔ کہ ہماری سیکولر ڈیموکریسی پر ایک کالا دھبہ ہے... "مداخلت"...

شری کیلاش نارائن سارنگ: جوگی جی کا بھی نام لکھ لینا... "مداخلت"...

شری کے۔ ایم خان: اس کی وجوہات جو کچھ بھی رہی ہوں۔ لیکن کسی ایسے انسان پر جس کا کوئی جرم نہ ہو۔ جس کا کوئی قصور نہ ہو ان پر اس طرح اگر گولیاں چلائی جائیں۔ اس طرح اگر ان کو ہلاک کیا جائے تو یہ ایک ایسا واقعہ ہے جس کی جتنی بھی مذمت کی جائے کم ہے۔ چیئرمین صاحب۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اخباری تبصرہ کے مطابق ۱۹ اور ۲۰ جولائی کے درمیان میں اس علاقہ میں بوڈو سیکیورٹی فورس کے لوگوں نے حملہ کر کے وہاں ۲۵۰ گاؤں جلا کر راکھ کر دیے ہیں اور ۱۲ افراد کو اس حملے میں ہلاک کیا گیا۔ ان کا قصور کیا تھا۔ ان کی غلطی کیا تھی۔ اگر ان کی غلطی یہی تھی کہ یہ نان بوڈو تھے ان کا کسی خاص طبقے سے یا فرقہ سے تعلق تھا تو میں سمجھتا ہوں کہ اور کوئی شرمناک بات نہیں ہوتی۔ ان کا کسی خاص طبقے سے تعلق تھا اور میں سمجھتا ہوں کہ اس سے زیادہ شرمناک بات نہیں ہو سکتی تو ان حالاتوں کے سلسلے میں یہ بات بھی سامنے آئی کہ جیسا یہ واقعات ہوئے اور ان کو ریلیف کیمپ میں بھیجا گیا تو پھر اس ریلیف کیمپ کو بارپیٹا میں جو ریلیف

پرچار کیا جا رہا ہے۔ نفرت کی جو آگ اس ملک میں لگائی جا رہی ہے دھرم کے نام پر۔ مذہب کے نام پر۔ بھاشا کے نام پر۔ علاقہ کے نام پر یہ جو نفرت کا کھیل کھیلا جا رہا ہے اس کو بند کرنے کی ضرورت ہے۔ یہ میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں۔ تو اس کے ساتھ ساتھ اور چند باتیں ہیں میں ان باتوں کا ذکر نہیں کروں گا یہاں جن کا مجھے پہلے میرے بورو وکتا نے ذکر کیا لیکن چند باتوں کا میں ضرور ذکر کرنا چاہتا ہوں۔ ابھی کہا گیا اور مجھے پہلے آئی۔ ایس۔ آئی کا ذکر آیا۔ میں صاف طور پر یہ کہنا چاہتا ہوں کہ سارا ملک آئی۔ ایس۔ آئی کی سرگرمیوں سے پریشان ہے اور اس میں کوئی دو رائے نہیں ہے۔ آئی۔ ایس۔ آئی کے جو لوگ ہمارے ملک کے اندر آکر ہمارے ملک کو تقسیم کرنے کی۔ ہمارے ملک کو ٹکڑے ٹکڑے کرنے کی سازشیں کر رہے ہیں۔ ان کے خلاف سرکار کو سخت سے سخت کارروائی کرنی چاہیے۔ لیکن ہم یہ دیکھتے ہیں۔ میں حیدر آباد شہر سے آتا ہوں۔ میرا تعلق حیدر آباد شہر سے ہے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ ہمارے شہر میں کچھ لوگ ایسی باتیں کرتے ہیں کہ آئی۔ ایس۔ آئی کا تعلق کسی ایک خاص فرقہ سے جوڑ دیا جاتا ہے کسی خاص کیمپ ہے یہ ایک الگ علاقہ میں رکھا گیا جو بھوٹان کے بارڈر کے قریب ہے اور چاروں طرف سے جنگل سے گھرا ہوا ہے۔ ایسے علاقہ میں ریلیف کیمپ کو رکھنے سے یہ بات بھی سامنے آئی کہ اس ریلیف کیمپ کی سیکیورٹی کے لیے جتنی فورس کی ضرورت تھی اتنی فورس وہاں نہیں تھی جس کے کارن ایک ایسے وقت میں جبکہ سارے علاقہ میں کرفیو لگا ہوا تھا ان دہشت گردوں نے ان کے کیمپ پر حملہ کیا اور سوتے ہوئے انسانوں کا قتل عام کیا۔ مجھے یقین ہے کہ ہمارا یہ ہاؤس ایسے واقعات کی بھرپور مذمت کرے گا۔ اس میں کسی پولیٹیکل رزرویشن سے کام نہیں چلے گا۔ کیونکہ یہ ایسا واقعہ ہے جس کو ہم ایک قومی سانحہ کہہ سکتے ہیں۔ اس کے بعد میں آپ سے یہ خواہش ظاہر کروں گا کہ ہم اپنی لڑائی اس ذہنیت کے خلاف اس آئیڈیالوجی کے خلاف شروع کریں جو نفرت کی آئیڈیالوجی ہے جو چھوٹے چھوٹے انسانوں کو ایک دوسرے سے تقسیم کرنے کی آئیڈیالوجی ہے۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ہم اس آئیڈیالوجی کے خلاف لڑیں۔ اگر لڑائی بوڈوز اور نان بوڈوز میں ہے تو اس کا حل تلاش کیا جا سکتا ہے جیسا کہ مجھ سے پہلے کہا گیا ایسا کوئی مسئلہ نہیں ہے جس کا حل نہیں ہے لیکن بنیادی بات یہ ہے کہ نفرت کا جو

اور اضافہ ہو جائے گا اس کے ساتھ ساتھ وہ سارے لوگ جو ان ۲۰ کیمپوں میں پناہ لئے ہوئے ہیں اُن کی ضروریات کا انتظام کیا جائے۔ کیوں کہ یہ سب لوگ غریب طبقہ کے لوگ ہیں ان میں سے بہتوں کا تعلق اقلیتی فرقے سے ہے اور یہ لوگ ایسے نہیں ہیں کہ دوبارہ سر اٹھا سکیں۔ دوبارہ اپنا جلا ہوا گھر بنا سکیں۔ اس لئے اُن کو باز-آباد کرنے کی ضرورت ہے۔ اس کے ساتھ ہی ساتھ میں آپ سے یہ بھی درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ ہمیں ایسا جتن کرنا چاہیئے ایسی کوشش کرنی چاہیئے کہ سچ کی تلاش کی تلاش کی جاسکے اور سچائی کی تلاش اس طرح سے کریں کہ آل پارٹی ڈیلی گیشن وہاں پر جا کر دیکھیں کہ سچائی کیا ہے کس طرح سے ہندوستان کا سب سے بڑا ادارہ اس مسئلے کا حل کس پر کار کرا سکتا ہے۔ یہ دیکھئے تو میں سمجھتا ہوں کہ کوئی غلط بات نہیں ہوگی۔

میں ان الفاظ کے ساتھ ایک بات اور کہنا چاہتا ہوں کہ سرکار نے جو ملیٹنٹس کے خلاف کارروائی شروع کی ہے بوڈو سیکیورٹی فورس کے جو ایلیمنٹس ہیں جو اس گھٹنا کے لئے ذمہ دار ہیں اُن کے خلاف کارروائی شروع کی جائے لیکن ایک بات میں صاف کہہ دینا چاہتا ہوں کہ ان سب کے خلاف کارروائی کرنے کے جوش میں کہیں ایسا نہ ہو کہ ہم ان اگر وادیوں کو پکڑنے کے جوش میں ایسے لوگوں

مذہب سے جوڑ دیا جاتا ہے اور کہا جاتا ہے کہ حیدرآباد کی مسجدوں کے اندر آئی۔ ایس۔ آئی کی سرگرمیاں جاری ہیں۔ کہہ دیا جاتا ہے کہ جو اقلیتوں کے مدد سے ہیں ان کے اندر آئی۔ ایس۔ آئی کی ٹریننگ ہو رہی ہے جو لوگ اس طرح کی بات کرتے ہیں تو یہ مسئلہ صرف بوڈو اور آسام کا نہیں ہے۔ یہ مسئلہ سارا دیش کا ہے۔ سارے ملک کا ہے۔ جو لوگ اس طرح کی باتیں کرتے ہیں ان کا مقصد یہ ہے کہ اس ملک میں نفرت کی آگ پھیلا کر اپنا مقصد پورا کیا جائے اس لیے میں آپ سے درخواست کرتا ہوں اور آپ کی توجہ سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ہم سب اس واقعہ کی بھرپور مذمت کریں اور اس کے ساتھ ساتھ بارپیٹا میں جو لوگ اناتھ ہوئے ہیں ان کے جو وارثین ہیں انکو معاوضہ دیا جائے۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ہر مہلوک کو دو لاکھ ابھی ملیں۔ ابھی جیسا عبید اللہ خاں جی نے کہا کہ ہر مہلوک کو دو لاکھ روپے کا معاوضہ دیا جائے اور اس کے ساتھ ساتھ جو بارپیٹا کا کیمپ ہے جس کے تعلق سے یہ رپورٹیں پڑھی گئی ہیں کہ یہ غیر محفوظ علاقہ میں ہے اس کو فوراً وہاں سے منتقل کیا جائے کیوں کہ اگر یہ کیمپ وہاں رہتا ہے تو وہاں بہت پریشانیوں میں جو لوگ رہتے ہیں اُن کی پریشانیوں میں

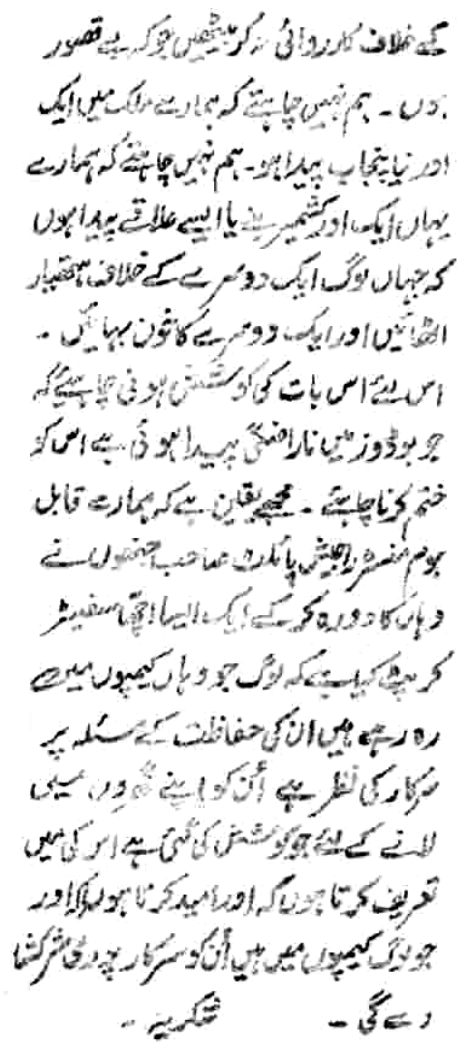

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Shri S. Vidu-thalai Virumbi. Absent. Shri G. Swaminathan. Absent. Shri Satya Prakash Malaviya. Absent. Shri V. Narayanasamy. Absent. Shri Suresh Pachouri. Absent. Shri Bhadreswar Gohain. Absent., Now I call upon the Minister to reply. Mr. Rajesh Pilot.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI RAJESH PILOT): Mr. Vice-Chairman, Sir^ I share the anguish of the House with a very heavy hea->rt. I mentioned this in the other Bouse also. I think any Member who is in my position will have the same feeling and it is very difficult to express one's feelings and to reply to a debate of this nature because such a tragedy has taken place there. It is a fact that we have been monitoring the situation in the North-East, especially in Assam. As my col league, Janeshwarji_ was saying here we in the Government have been trying[1] to go as closer to their culture, as closer to their feelings in many ways, to understand them to bring them as closer to the mainstream as possible.

Sis I still remember what th< Pandit Jawaharlal Nehru had said when he was speaking at Dimapur in one of the public meetings. Some of the Congress members approached him and said, "We can build a party here." It was Nagaland People's Party (NPP) initially. He said, "Building Congress Party is not important. Building goodwill among I people here and bringing thi into the mainstream are more important." That $was$ the message he [gave to the party people there.

1 assure you^ Sir. that we have been following that line. Tf you recollect, there was an agitation in Assam. I was a Member of Parliament at that time and the late Rajiv Gandhi was the Prime Minister. We had held a discussion with the AGP and the AASU leaders and we talked to them. $We$ said "Let us sit together and see what could be best $fo_r$ As sam and what could be best for our brothers and sisters in these far-flung areas. Let us chalk it out and I see how we can work together." We had an accord. We had a duly elected Government of the Congress Party. And the Chief Minister resigned. We want in for elections knowing very well that the Congress

would lose. We knew that we would lose our Government. Bu$_t$ w$_e$ wanted peace in Assam. Similarly, in Mizoram there was an ejected Government of the Congress. Th$_e$ Chief Minister resigned. We went in for an Accord with the late Laldengajj and tried to bring peace there. With this kind of an approach we have n working. It is $_a$ fact that when v/e thought about this Accord the feeling was that the Bodo problem was there for the last 10 orl.2 years. I still remember that this problem was being discussed from the mid-1980s onwards by the late Rajiv Gandhi at that time. Then the subsequent Governments of Shri V. P. Singh and Shri Chandra Shekhar were having continuous dialogues with them as to how to bring them closer. I do agree with the feeling of the hoh. Members that no accord is perfect. The accord is an instrument, is a channel to reach nearer to the solution. I am not saying that the whole solution lies with the Accord. It is the spirit behind the Accord which is more important. With that spirit in mind, I and the officials of the State Government of Assam discussed it for nearly one week. After that we signed this Accord with that spirit so that they could retain their culture they could develop themselves and they could develop that area. Let me assure the House that the Accord was well received by th$_e$ commen man I attended the rally after the Accord in 1993. I have been in. politics for the last 15 years. We have arranged transport and other resources for big public meetings. The Bodo people and the non-Bodo people were there. Nearly 10 lakh people were there. 1 could not believe it. All of them ladies, gent$_s$ and children, were coming there with great hopes. A lot of people surrendered that day. We started i$_t$ i$_n$ that spirit. Here I agree with my colleagues who have pointed out that that they started with good speed. We held discussions with them about the boundary.

There was some difference of opi nion. The Chief Miniscer, after dis cussing i$_t$ with all the political par ti e:3$_>$ which I was given to under hand, decided abou^ 2570 villages They were asking for 3085 villages. On my own$_i$ I called the Eodo peo ple and talked to them. I said$_a$ "In case you don't gain the confidence of the non-Bcdo people, you would not succeed in this effort of the aim with which this Bodo Council has been formed.'" That is why five of six non-Bodos were nominated. We kept the nominating authority with the State Government and the Governor so that the non-Bodos could be pare $^{anc}$* parcel of the Council. That was the intention behind it. Sir; a lot of people from Bihar, Rajasthan West Bengal and northern parts of the country have come and settled in that area. They are there for hundred of years. They live like brothers and sisters. They speak the same language. They live in the same style. They celebrate most of the festivals together. That sort tf culture has developed. We want to retain that with the same strength and the same fibre of common approach to all of them. There wan some improvement. We had an open mind for that'. They asked for some more villages. Some 20 days back the hon, Chief Minister and the whole Council had come. I talked to tht Environ. men$_t$ Minister. I said "There is a total tribal belt. With your forest restriction, can we still give them some areas so that they have the satisfaction that they have the Bodo land and the Bodo Council?" It was in the process. Unfortunately, this incident took place. Sir between 19th and 21st the Bodos attacked that area. The camp was set up at Bas-bari which is 30 to 35 kilometres away from the Bhutan border. I received the information on the 24th morning. On that day, I was going to Kashmir. But, the Prime Minister said "No, this incident requires your immediate attention." So, I flew to GuwahatV »'«tfi my colleagues, Shri

[Shri Rajesh Pilot]

Tarun Gogoi and Shri P. M. Sayecd and some Members of Parliament. We reached the spot and talked to the people. We talked to the State Government. I have accepted in the other House that there was no coordination among the functionaries of the State Administration and the intelligence agencies. There was a shortage of police force in that camp. I have also accepted it. I ctld it to the Chief Minister. I said, "Knowing that so many people were there, your force should have been adecuate on the camp; knowing fully well that there could be an attack on the Bodos in that sector, knowing that the attack could be intensified any moment, you should have taken precautions." But I personally feel that they must have thought that so many people were there in the camp and, so, there was no question of a further attack on them. Now according to the information which has been given by the hon. Chief Minister, some of these people intruded from the Bhutan side and attacked these camps; 35 people died and 71 people were injured. The hon. Chief Minister and his colleagues were there in that area. When I asked the D.G. "Did you have the information that this attack could be intensified by them?", he had no answer. Then, I asked the Intelligence Bureau people, "Did you have the information? Dad you share the information with the Administration?" I must accept that there was a slackness on their part. None of them could answer my question. The hon. Chief Minister and my Minister colleagues were sitting there. Immediately I pointed out that since the last six months, I have been trying to improve the system of sharing information with the Administration. Any party can *run* a State Government; any party can be in power. But it is the Government which has to protect the nation from such activities.

We decided that on every Monday, the I.B. officers must brief the State Administration about their information. They should share it with them. There is no point in the I.B. sending their information to Delhi and then the same information being sent from Delhi to Guwhati through a different channel. We have decided that once in a week the District Administration must be briefed; once in 15 days at the level of the Commissioner^ the Chief Secretary and the D. G._ the senior most I. B. officers must share the available information. I am not saying that all -in agencies are so perfect that they can predic-| whatever is going to happen. But whatever information they * have, whatever apprehensions they have they must share them with the State Administration so that the State Administraion so that the Stae Administration and efficiently cfcm-trol the situation and it can be precautionary measures.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): I understand s that there is a computerised system in a]J the districts.

SHRI RAJESH PILOT: I am coming to that. We started it. We decided that we should have control rooms in all the districts. Twenty-four are functining now. My problem is_ though some of the State Governments do confirm to it in practice, they do not move with speed. Realising the importance because we have seen in Bihar and other States where the Intelligence Agency would never inform a District Collector; some precautionary measures were taken. This necessity was felt more so in the North-East, because

of the conditions prevailing there. We felt that till such time that all the seven States did not share the information with one another they would not be very well-equipped to take preventive measures. To enable this< a scheme has been started at Shillong whereby Aysam, Arunachal Pradesh Meghalaya Tripura; Naga-land, Sikkim and Mizoram can get the information everyday from Shillong. There is also a computerised feedback to each State. There are hotlines available to the Chief Ministers and the D.G.s from the Shillong Control Room so that any happening's in Mizoram ca$_n$ be made known to the Assam Chief Minister; likewise any happenings in Assam can bo made known to the Arunachal Pradesh Chief Minister. Supposing an insurgent group is moving from Mizoram to Assam, the Assam Chief Minister should get the information earlier so that be can take precautionary measures. This system has just started. It has to pick up. It has *noi* been stabilised to such a ree that i$_t$ is totally in control all over. We selected Shillong deg because communication was much be-ter from Shillong than from other places. It is working. A 15.G.-rank officer has been notified *l.j* co-ordinate with all the seven States and share the IB. information and other things. Now; when this particular incident took place, afte$_r$ discussing with the State Government offieials_ I went to the camp with my colleagues and the hon. Chief Minister was there. It is a fact that the camp people did tell us that the police force was very; very inadequate. They did tell us that those people fired from such and such area but there was no police force available to go and counter that. The hon. Chief Minister assured me that be would take action against those people who did not act on such information and who were responsible for not having adequate force available there. He asked for the deployment of the army. Immediately I talked to the hon. Prime Minister, who also holds the Defence portfolio< and Shri Mallikarjun. And the army was deployed immediately at whatever points he asked for. To day mormng we got a communication from him. He wanted the army to be deployed in seven districts more. That, has been taken up with the Defence Ministry. We are trying to give as much force as is available. Basically, I have been insisting on the State Government that they should equip their own force. For Assam we gave special money for modernisation of their police force. We gave them special things so that they can train their people accordingly. The para-military forces should only be a fire-lighting force. When there is a problem, they should go there_ help them and come back. But this "attitude of the State Governments to get the para-military forces and station them there or two or three years is not a very healthy sign. That is why we are bringing in accountability; whenever you need the para rnibtary forces, you give us a mission^ you give us a job; the para-military forces will do it and come back.

Now, Sir_ for the North-East we have opened a Zonal Centre at Gu-wahati because since the force is going from the North and the North-East, i$_t$ takes a lot of time_ you have to airlift it and it is also very costly and time-consuming[1]. We have made Guwahati as the Zonal Centre so that all the reserve forces!, all the para-military forces are available at Guwahati and they can be diverted any time to the States. Now< if they wanted 15 Companies of the Central Reserve Police Force, I have only five available there as reserve.I immediately ordered that those five must move and that we should supplement the remaining ten from Bihar or West Bengal.

I would; at the moment; share this information with the House that

[Shri Rajesh Pilot]

we are equally concerned. I fully share what Mr. Dutta and the other colleagues have said that the North-East is a sensitive area and that in surgency has been a very old prob lem in that area. But, Sir, there have been improvements. Unfortu nately, one incident takes us six months back in our efforts. There has been improvement in the insur gency control. We have bee$_n$ having the same approach in Nagaland and in Mizoram too. As my young friend David Ledger^ has said, we have an open approach Policy. We want *to* talk to any organisation which can help us in bringing normalcy. We want the gun culture to go from the country. But, with the same ap proach, we cannot $^a$ll°w the gun cul ture to remain there with our soft ness. We have got to go very hard on insurgency, but with the same approach of an open heart, to have a discussion and bring normalcy. What Mr. David has hinted, Sir_ we have said to some organisations that first they must $^s$top their gun culture. You cannot talk to a person who is firing everyday at the citizens and then you tell them tha$_t$ you are rea dy to talk to them. You have got to tell him, "You shut your gun and tell us that you are ready to come to the mainstream." Then only the Government can consider that dis cussion because you have to restore the confidence of the people prob lems which are faced in those areas are numerous. You all come from th$_e$ Norts-East. Sir_ economically; we have taken a lot of steps to bring this area into the mainstream. The main problem is that these are far-flung areas. In that House; some body had mentioned that emotional ly they must be atttched with us. Sir we have the decisions to connect most of these places with air links. I am also happy that Shri Jaffer Sharifji has introduced the Shatabdi Exp. now between Guwahati and Delhi. Some more rail connection are going to be decided so that tihis area gets connected to the mains-ream. Now they are so far-flung that they do not feel that they are closer to the mainstream. Similarly, air links have been thought over. When I was the Minister for Communications, we gave priority to all the North-Eastem areas so that they have the best communications available there to contact any part of the country or any part of the world and that they feel that they are in the mainstream. All these efforts have been made.

Sir, we have a separate formula for the economic development of the North-East. A separate Committee has been made for economic development of all the seven States which the Home Minister is heading. Of course, Sir there are some lacunae in the system. As my colleague has mentioned, there is misuse of the resources. But gradually, we are getting over all this. I have brought in some accountability in the system. I am very sure, Sir, that with our approach of having economic development of that area, fighting the insurgency with a strong hand_ having an open approach policy to have discussions with them to bring them into the mainstream, will certainly bear good fruits.

Lastly, Sir, We are monitoring the situation in Berpeta and other places I can assure the House that although law and order is a State subject, still we give special attention to the North-East and that special care will be taken for those areas. Sir, the Army, the para military forces and the other deployed forces have done a very good job. When t go to the rural areas there, the way they are facing the insurgents, the way they are bringing the peple there into the mainstream, the people there say that they are happy just because the Army is there. They say they are happy that the para-military forces are there. They look after them| They mix up with them. They live like families and that is one

thing which has brought them closer to. the mainstream in the (North-East, Sir, I assure the House that these efforts would continue. It is a tragedy and such incidents should not be repeated. We will certainly lost all our efforts on the side so that normalcy is main, tained and such incidents do not take place again in those areas. This assurance - I can give

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : महोदय, माननीय मंत्री जी ने शमसुल हक के बारे में कुछ नहीं कहा (व्यवधान) श्री शमसुल हक के बारे में आपकी क्या राय है और उन्होंने क्या कायवाही की ? . . . . (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Shri Swell.

SHRI G. G. SWELL: Sir I put a direct question to the Minister. After the explosion that took place *on* the police van, was there an attack by a group of men led by a Minister of the State Government on a Bodo village and atrocities were committed on the Bodo people and Bodo women and this attack by the Bodo Security Forces was in retaliation to that action?

SHRI RAJESH PILOT: Sir, I think, all of them have this apprehension that some individual was involved in inciting these incidents, as my senior colleague, Swellji, has said. I will certainly get the details on this particular incident which you have said. Your information is given to me. I will certainly talk with the State Government, verify it and if it is so, I will certainly take action and let that action be known to you.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : महोदय, शमसुल हक की कार्यवाही की कोई सूचना आपके पास नहीं है . . . (व्यवधान) आपकी वहां इंटेलीजेंस है, आप कहते हैं कि हर जिले में है, लेकिन शमसुल हक साहब ने क्या किया इसकी कोई सूचना आपके पास नहीं है, कैसी इंटेलीजेंस आपकी चल रही है ?

SHRI RAJESH PILOT: Shastriji, leave aside the intelligence. I ha'l personally gone there. I had gone to the camp itself. After that I met the representatives of political patties. They have given me some Memoranda on similar lines on which you are saying. I immediately gave them to the Chief Minister saying, "I want your comments, Chief Minister, on it." Before I get the comment on a piece of information which I cannot verify or about which I cannot really say with certainly whether it is wrong or right.

श्री संजय कोतम (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष जी, चर्चा के दौरान कुछ सदस्यों ने कुछ राजनीतिज्ञों को और कुछ अधिकारियों को इस कांड के लिए दोषी ठहराया । आपसे यह पूछना चाहता हूं मंत्री जी, आपकी जानकारी में क्या कोई राजनीतिज्ञ और अधिकारी दोषी पाया गया या ठहराया गया ? किसी के ऊपर आपने जिम्मेदारी डाली ? क्या किसी के खिलाफ क्रिमिनल केस रजिस्टर हुआ ? क्या किसी भी राजनीतिज्ञ या अधिकारी की गिरफ्तारी हुई, क्या किसी को नौकरी से सस्पेंड किया गया ? अगर यह नहीं है तो क्षमा करना, आई वाश के अलावा कुछ नहीं है और कुछ न आगे होने वाला है । अब आप बताइये क्या है ?

श्री राजेश पायलट : सर, जैसा मैंने खुद कहा कि मुख्य मंत्री जी मेरे साथ कैंप में थे । मैंने मुख्य मंत्री जी से कहा कि अधिकारी कहीं-कहीं जो फेल हो गए हैं उनके खिलाफ एक्शन लेकर हमें बताइये । यह 24 तारीख की बात है । जो आपने कहा कि मुझ पर शिकायत आई मैंने मुख्य मंत्री जी से कहा, गौतम जी, यह तो मानोगे 24 तारीख की शाम को लौटकर 27 को मैं आपको बता दूं कि स्टेट गवर्नमेंट ने कितना एक्शन ले लिया है । मुझे जो खबर है कि कुछ अधिकारियों के खिलाफ भी कार्यवाही हुई है, कुछ लोग अरेस्ट भी किए गए हैं, लेकिन जब तक यह पूरी इन्फर्मेशन सही रूप में नहीं आ जाए, हाउस को आधी इन्फर्मेशन देने की बात ठीक नहीं रहेगी आपका कहना तो सही है, लेकिन किसी भी मजबूरी आप समझिए ।

[श्री राजेश पायलट]

As a Minister, I must tell the House only information which is totally correct and which has 4>een made available by the State Government.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: What action has really been taken? *ion)...* There is no transfer no punishment. You first put them under suspension *(Interrupt ions)*

**श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार):** उपसभाध्यक्ष जी, जब भी इस तरह का कोई गंभीर मामला देश के किसी हिस्से में होता है तो वह पक्ष और विपक्ष का मामला नहीं बल्कि मानवता का होता है और राजनीति से ऊपर उठ कर देश इस पर विचार करता है और सदन में इसकी चर्चा होती है। मैं एक बात जानना चाहता हूं कि जहां प्रांतीय सरकारें हैं वहां राज्य सरकार का प्रथम कर्तव्य होता है सुरक्षा की व्यवस्था देना, जान-माल की रक्षा करना। इतना बड़ा कांड जो हुआ नृशंस कांड जिससे पूरा देश हिल गया और एक जगह राहत कैंप पर ऐसा लगा कि जैसे खुदरा जो हिंसा की घटनाएं हो रही हैं उसको एक जगह ला करके खड़ा किया गया। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि क्या आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि राज्य प्रशासन की ढील के कारण या अक्षमता के कारण ऐसा हुआ है या राज्य प्रशासन से नहीं बन पा रहा है, जो इस तरह के काम हुए? और, जहां इस तरह की असफलता होती है, वहां उस राज्य सरकार को रहने का कितना हक है? जब आप यहां से संचालन कर रहे हैं तो फिर उनकी क्या आवश्यकता है? इसको जरा आप बताइए।

**श्री राजेश पायलट:** सर, मैंने खुद यह कहा कि अगर कहीं कमी नहीं होती तो यह इन्सीडेंट नहीं होता। मैंने चीफ मिनिस्टर के सामने कहा है, उनके अधिकारी और सारे मंत्री थे, कि यहां लैप्स एडमिनिस्ट्रेशन का हुआ है, इंफोरमेशन, गेदर नहीं हो पायी है। पुलिस की कमी क्यों रही है, मैं खड़े खड़े चीफ मिनिस्टर से उस वक्त इतना जवाब नहीं मांग सकता था।...

**श्री शंकर दयाल सिंह:** इसीलिए मैंने आपको एक्यूज नहीं किया है, भारत सरकार को कुछ नहीं कहा है।

**श्री राजेश पायलट:** ऐसे मौके पर मैं गया था कि जहां एक दुखभरी घटना हो गई थी। वहां एक तरफ इतनी मौतें हो गई थीं और दूसरी तरफ 57 हजार भाई बहन अपना इलाका छोड़कर एक जगह आए थे। स्टेट गवर्नमेंट उनके इंतजाम में लगी हुई थी। मैंने यह समझा कि मैं स्टेट गवर्नमेंट को यह जरूर कह दूं कि यह तुम्हारी गल्तियां रही हैं, इनको सुधारो। ऐसे मौके पर उस काम में बाधा डालना ठीक नहीं था क्योंकि 57 हजार आदमियों को शाम का खाना न मिले या आगे कोई बात बन जाए तो वह भी एक गैर-जिम्मेदाराना काम होता, लेकिन मैंने वहीं पर कहा कि जिस किसी की गलती हो उनके खिलाफ आप एक्शन लें।

**श्री शंकर दयाल सिंह:** यही मैं जानना चाहता था कि यदि वह नहीं सुधरे तो क्या आप राष्ट्रपति शासन वहां लागू करेंगे और वहां की सरकार को डिसमिस करेंगे? आपको यह आश्वासन देना चाहिए। ...(व्यवधान)...आपके खिलाफ या भारत सरकार के खिलाफ मैं नहीं कह रहा, लेकिन यह जानने का हमें हक है कि अगर भविष्य में इस तरह की घटनाएं होती हैं तो उस सरकार को क्या रहने का हक है? यह सदन को बताया जाए। ... (व्यवधान) ...

SHRI RAJESH PILOT; Sir, let me tell him one thing. In Manipur, it was the Congress Government which failed. We dismissed that Government. We imposed the President's Rule. It was the Congress Government. We imposed the President's Rule. It was the Congress Government. We do not hesitate to take action against that Government

which has failed. But this has to be decided by the Government whether they have reached that category or not. In Manipur, we dismissed OUT* Government, we dismissed our Congress Government because we knew that the State Government had totally if ailed. So, please rest assured that the nation is more important Political party is not. important, State Government is not. important, but the nation is more important. That is the attitude that we have.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH: Thank you. I am now satisfied.

**श्री कैलाश नारायण सारंग :** उप-सभाध्यक्ष महोदय, एक क्लैरिफिकेशन मुझे भी पूछना है। मैं बहुत देर से मंत्री महोदय का भाषण और उत्तर सुन रहा था। बड़ा अच्छा बोल रहे थे कि मैंने ऐसा किया, मैंने वैसा किया, इस सरकार ने ऐसा किया और यह सब हो रहा है। मुझे लगा कि यह केवल आई वाश के अलावा कुछ नहीं था और इस मौके पर उर्दू का एक शेर याद आ गया—

आप इस देश के गृह मंत्री है,

तू इधर उधर की न बात कर,
यह बता कि कारवां क्यूं लुटा।
मुझे रहजनों से गरज नहीं,
तेरी रहबरी का सवाल है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इतने सारे लोग मर रहे हैं, पंजाब जल रहा है, कश्मीर जल रहा है और आप क्या कर रहे हैं? आपने कहा कि मैंने ऐसा किया, वहां कम्प्यूटर लगा दिये, वहां वायरलैस लगा दिया, वहां यह तैनात कर दिया और वह कह रहे हैं लोग मर रहे हैं, आपने क्या किया? किसको सजा दी? इसका कोई जवाब नहीं है। मुझे लगता है कि केवल आई वाश के अलावा कुछ नहीं किया। ...(व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): No reply is needed.

**श्रीमती सरला माहेश्वरी :** वाइस चेयरमेन साहब, माननीय मंत्री जी से मैं एक सवाल करना चाहूंगी। हालांकि उन्होंने अपने मंत्रालय से संबद्ध सभी पहलुओं पर विस्तार से रोशनी डाली और सुरक्षा संबंधी जो कमियां थीं उनका भी स्वीकार किया, लेकिन मंत्री महोदय इस बात को भी स्वीकारते हैं कि असम की समस्या के साथ उसके विकास का पहलू भी बहुत गहरे से जुड़ा हुआ है? मैं आपसे जानना चाहती हूं कि क्या आप इस बात से अवगत हैं कि असम की सरकार किस भयावह आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रही है? आज भी यह हो रहा है कि केन्द्रीय वार्षिक योजना से असम का जो हिस्सा होता है, उसमें से बहुत बड़ी राशि कर्ज के रूप में काट ली जाती है। मैं उदाहरण देना चाहूंगी कि पिछले वर्ष असम में बाढ़ नियंत्रण के लिए 25 करोड़ रुपया निर्धारित किया गया था, मगर उसमें असम को कितना मिला? सिर्फ 65 लाख रुपया मिला। आप इस तरह की स्थिति में क्या असम के विकास की कल्पना कर सकते हैं? किस तरह से वह सरकार, जिसके पास आर्थिक संसाधनों की इतनी कमी है, प्रदेश का विकास कर सकती है? मैं चाहूंगी कि आपकी कैबिनेट बैठकर इस पर विचार करे और असम, जो विकास में इतना पिछड़ा रह गया है, उसके लिए जरूर एक सर्वसम्मति से निर्णय ले।

SHRI RAJESH PILOT: Sir, it is a fact that thi$_s$ problem is there *in* all the seven States of the Nouh-East. Last time, at the time of the Chief Ministers' Conference, we all had a meeting with the hon. Prime Minister. He assured us that h$_e$ would do something. Sir, the system which is operating in the North-East is slightly difficult. The hon. Member is right. Some of th$_e$ money which is allocated goes for overdraft. Even in the case of the Bodoland Autonomous Council, out of the Rs. 4? crores which is allocated to them in 1993.94 Rs. 14 crores goes for pa> and allowances. If oiii of Rs. 47 crores, Rs 14

[Shri Rajesh Pilot]

crores goes for pay and allowances, how can development be there?

Sir, the system is so faulty there. As ;, the hon. Prime Minister has assured us that he would call the Ministers and he would discuss wi th them as to how we can solve this financial crisis. Naturally, develop-would take place only if resour- css are available. I do share the of the lion. Member. I will y this feeling, I will convey the hon. Member has said, to I on. Prime Minister once again.

SHRI BHUBANESWAR KALITA: while giving his reply, the hon. iter mentioned that in a meeting iber of Bodo militants had surr- : d. Subsequently also, a num-bi )' of Bodo militants had surrend- i the District Administration. In this connection, I would like to know programmes are being implemented to rehabilitate these Bodo militants who have surrendered. I would to know whether anybody has yet been rehabilitated. What program-mos the Government has to rehabili. they formed the Bodoland People's rate them?

SHRI RAJESH PILOT: Sir, as I mentioned, we are in the process of implementing the Bodo Accord. We v;er$_e$ having regular meetings. Un- iately, in the meantime, the .U'Qup broke. Intitially, they were the Bodoland Action Committee. Then, the;/ formed the Bodoland People Party. They broke among themselves. The group got divided. Both the groups started demanding different things. It become difficult *$^{or\ us}$-. At a personal level. I tried to bring them together because I felt that these tribals were sensitive about such things that they were very clear-hearted and straight, forward. I wanted to bring them together as a team and move forward. While we wers> engaged in this pro- cess, this thing had happened. / I assure the House, Sir, that our | intention is to develop the area. Our intention is to bring our brothers and sisters in this far-flung area into the national mainstream. This would continue and we would certainly succeed in our efforts.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL). The discussion on thi$_s$ Short Duration Discussion is over. We now take up th$_e$ next item on the agenda. Shri Thangka Balu.

## GOVERNMENT MOTION

## TWENTY-EIGHT AND TWENTY - NINTH REPORTS OF THE FORMER COMMISSIONER FOR SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES AND THE FIFTH, SIXTH, SEVENTH AND EIGHT REPORTS OF THE i NATIONAL COMMISSION FOR SHE-DULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES

THE MINISTER OP STATE IN THE MINISTRY OF WELFARE (SHRI K-V. THANGKA BALU): Mr. Vice. Chairman, Sir, I beg to move the following Motion:

"That the Twenty-eighth- and the Twenty-ninth Reports of the erstwhile Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the years 1986-87 and 1937-89 laid on the Table of the Rajya Sabha on 9th Mby, 1989 and 31st August, 1990,

. respectively, and the Fifth, the Sixth,

$_t$ the Seventh and the Eighth Reports of the Commission (now National Commission) for Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the years

I 1982-83, 1983-84, 1984-85 and 1985. 86 laid on the Table of the Rajya

\ Sabh$_a$ on 7th March, 1986, 28th August, 1987, 6th May, 1988 and 18th November, 1988 respectively, be

L fakep into consideration,"